• बाल कविताएं...

अंतरिक्ष की सैर...

नभ के तारे कई देखकर
एक दिन बबलू बोला।
अंतरिक्ष की सैर करें मां
ले आ उड़न खटोला॥
कितने प्यारे लगते हैं
ये आसमान के तारे।
कौतूहल पैदा करते हैं
मन में रोज हमारे॥
झिलमिल झिलमिल करते रहते
हर दिन हमें इशारे।
रोज भेज देते हैं हम तक
किरणों के हरकारे॥
कोई ग्रह तो होगा ऐसा
जिस पर होगी बस्ती।
मां, बच्चों के साथ वहां
मैं खूब करूंगा मस्ती॥
वहां नये बच्चों से मिलकर
कितना सुख पाऊंगा।
नये खेल सिखूंगा मैं,
कुछ उनको सिखलाऊंगा॥

■ त्रिलोक सिंह ठकुरेला

अगर...

अगर उन्हें आवाज मिले तो
क्या बोलेंगे फूल,
सबसे पहले वह बोलेंगे
हमें तोड़ना भूल।
अगर उन्हें उड़ना आ जाता
कांटा क्या कर पाते,
मधुमक्खी सा डंक चुभोकर
सबको मजा चखाते।
अगर भागना उनको आता
पौधे ये कर जाते,
आता हुआ देख दुश्मन को
झट से रेस लगाते।

■ अरविंद बख्शी

• चुटकुला...

बंता का पांव केले के छिलके पर पड़ा और वह फिसल कर गिर गया।
बंता उठा और फिर आगे चला, अब दूसरे छिलके पर पांव पड़ा और फिर फिसल कर गिर गया।
बंता फिर उठा और थोड़ा आगे चला कि तीसरा छिलका दिख गया!
बंता रोते-रोते बोला, 'मर गया रे, अब फिर से फिसलना पड़ेगा'।

• जानकारी...

साइबेरिया में गड्ढों का रहस्य

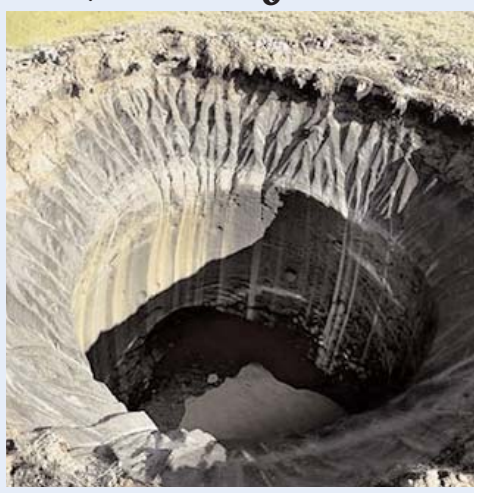

रूस का एक विशाल और ठंडा क्षेत्र साइबेरिया इस वक्त दुनिया के लिए रहस्यमयी बना हुआ है। हाल के वर्षों में यहां कई बड़े गड्ढों के निर्माण ने दुनिया को चिंता में डाल दिया है। रूस में इन गड्ढों को 'बुल्गा' कहा जाता है। वैज्ञानिकों और भूवैज्ञानिकों की टीम अब इस रहस्य को सुलझाने में लग गई है कि आखिर ये हो क्यों रहा है और इससे पृथ्वी पर किस तरह का प्रभाव पड़ रहा है।

गड्ढे बन क्यों रहे हैं-साइबेरिया में बड़े गड्ढों का निर्माण मुख्य रूप से पर्माफ्रॉस्ट के पिघलने के कारण हो रहा है। पर्माफ्रॉस्ट के बारे में अगर आप नहीं जानते, तो आपको बता दें कि पर्माफ्रॉस्ट वह परत है जो स्थायी रूप से जमी रहती है और इसमें हजारों वर्षों से कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन गैसें कैद होती हैं। पृथ्वी पर जब जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान बढ़ता है, तो यह पर्माफ्रॉस्ट पिघलने लगता है और फिर बड़े-बड़े गड्ढे बनने लगते हैं।

गड्ढे बनने की पूरी प्रक्रिया को समझिए-दरअसल, जब पर्माफ्रॉस्ट पिघलता है तो उसमें कैद कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन गैसें बाहर निकलने लगती हैं। यह गैसें धीरे-धीरे जमीन के अंदर दबाव बनाती हैं और जब यह दबाव बहुत ज्यादा हो जाता है, तो यह जमीन की सतह को उड़ा देता है। यह किसी विस्फोट की तरह होता है।

इस विस्फोट के बाद ही उस जगह पर एक बड़ा गड्ढा बन जाता है। गड्ढा बनने के बाद उसमें लगातार कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन गैसें निकलती रहती हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि ये गैसें पृथ्वी के वातावरण को बर्बाद कर रही हैं।

2014 में बना पहला गड्ढा-साल 2014 में, साइबेरिया में पहली बार एक विशाल गड्ढा देखा गया था। इसके बाद और भी कई गड्ढे इस क्षेत्र में बने। वैज्ञानिकों का मानना है कि ये गड्ढे आने वाले साल में और भी ज्यादा बढ़ सकते हैं। रूसी वैज्ञानिकों के मुताबिक, ये गड्ढे केवल साइबेरिया ही नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन का संकेत दे रहे हैं।

• गोपाल भांड

कटहल पाने की तरकीब

गोपाल भांड अपने वाक्चातुर्य और समाज के अनुसार खुद को ढाल लेने की अपनी विशिष्ट क्षमता के कारण महाराज कृष्णचंद्र का चहेता बन गया था। महाराज भी उसकी वाक्पटुता और बुद्धिकौशल से बहुत प्रभावित थे। उनका मन उसके साथ लगता था। अब वे दरबार के बाद भी गोपाल को किसी न किसी बहाने रोक लेते। उसके साथ इधर-उधर की बातें करते, घूमते-टहलते।

एक दिन की बात है। महाराज ने गोपाल भांड से कहा, 'गोपाल, आज दरबार के बाद थोड़ी देर रुकना। सीधे-सरपट घर की राह मत पकड़ लेना।'

गोपाल ने शिष्टतावश कहा, 'जो आज्ञा महाराज।'

शुरू से अंत तक उस दिन दरबार गहमागहमी वाला बना रहा। समापन पर जब कर्मचारीगण अपना-अपना खाता-बही समेटने लगे, तब महाराज अपने आसन से उठे और गोपाल को अपने साथ लेकर बागीचे की तरफ चले गए। देर तक महाराज बागीचे में टहलते रहे और गोपाल से बातें करते रहे।

शुरू से अंत तक उस दिन दरबार गहमागहमी वाला बना रहा। समापन पर जब कर्मचारीगण अपना-अपना खाता-बही समेटने लगे, तब महाराज अपने आसन से उठे और गोपाल को अपने साथ लेकर बागीचे की तरफ चले गए। देर तक महाराज बागीचे में टहलते रहे और गोपाल से बातें करते रहे।

बागीचे में टहलते-टहलते वे दोनों उस भाग में आ गए, जहां फलदार वृक्ष लगे थे। गोपाल को पके कटहल की सुगंध मिलने लगी। उसे कटहल बहुत पसंद था। जैसे-जैसे दोनों आगे बढ़ते रहे, कटहल की गंध और तेज होती महसूस हुई। चलते-चलते वे दोनों उस स्थान पर पहुंच गए, जहां कटहल के पेड़ों का लम्बा सिलसिला था। पेड़ों के तनों से लटके पके कटहलों को देखकर गोपाल के मुंह से पानी आने लगा। इच्छा हुई कि वह महाराज से कटहल मांग ले, मगर संकोचवश वह ऐसा नहीं कर पाया।

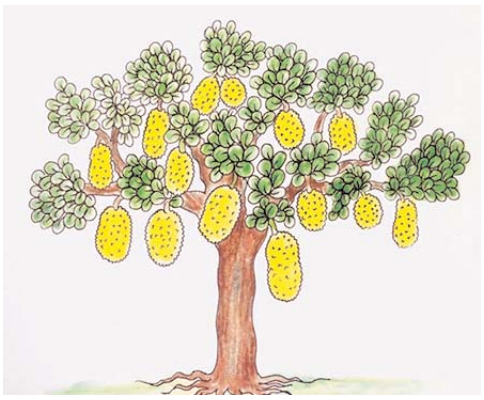

सूरज डूबने के बाद जब अंधेरा घना होने को आया, तब महाराज ने गोपाल को घर जाने की इजाजत दी।

बागीचे से घर की राह पकड़ने के बाद भी गोपाल की नाक में कटहल की सुगंध बसी रही। उसका मन ललचा रहा था। रास्ते में वह सोचने लगा कि ऐसी कोई तरकीब निकाली जाए कि बिना मांगे ही महाराज उसे कटहल दे दें।

इसी उधेड़-बुन में राह कैसे कट गई, उसे इसका भान नहीं रहा।

घर पहुंचकर गोपाल ने हाथ-पैर धोए और भोजन करके बिस्तर पर लेट गया। कटहल की सुवास उसे याद आती रही। अंततः कुछ निश्चय कर वह सो गया।

दूसरे दिन जब वह दरबार जाने के लिए तैयार हुआ, तब आईने के सामने खड़ा होकर देर तक अपनी मूंछों पर तेल मलता रहा। उसने खूब सारा तेल अपनी मूंछों और होंठों पर लगा लिया। जब गोपाल दरबार में उपस्थित हुआ, तब उसकी मूंछों से टपकते तेल को देखकर दरबारी हंसने लगे। दरबारियों के हंसने का कारण जानने के लिए महाराज ने जब गोपाल की ओर देखा तब उन्हें भी हंसी आ गई। -जारी

• रोचक...

गोलगप्पे

गोलगप्पे के पहली बार बनाए जाने की बात करें तो इसके तार महाभारत के समय से जुड़ते हैं। हालांकि, इसके कोई ठोस सुबूत नहीं हैं, लेकिन कहा जाता है कि इसे पहली बार द्रौपदी ने बनाया था। महाभारत के अलावा गोलगप्पे का संबंध मगध से भी जोड़ा जाता है।

कहा जाता है कि गोलगप्पे को पहली बार मगध में ही फुल्की कहा गया था। आपको बता दूं उत्तर प्रदेश, बिहार और कई राज्यों में गोलगप्पे को फुल्की कहा जाता है। हालांकि, इन्हें मगध में पहली बार किसने बनाया था इसके बारे में जानकारी नहीं है। लेकिन, इसके मगध के होने के पीछे तर्क ये दिया जाता है कि गोलगप्पे में पड़ने वाली मिर्च और आलू दोनों मगध काल यानि 300 से 400 साल पहले भारत आए थे। ये दोनों चीजें गोलगप्पे के लिए बेहद जरूरी होती हैं।

• ब्लू-रिंग्ड ऑक्टोपस...

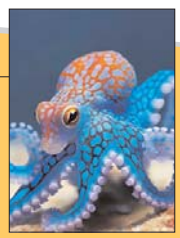

ऐसा देखा जाए तो भारत में ऑक्टोपस कम ही लोग खाते हैं। लेकिन अगर आप ऑक्टोपस खाते हैं तो आपको इस ऑक्टोपस से दूर रहना चाहिए। आपको बता दें, ब्लू-रिंग्ड ऑक्टोपस बहुत छोटे आकार की होती हैं, लेकिन उनके जहर में टेट्रोडोटॉक्सिन होता है, वो इंसानों के लिए खतरनाक होता है। इस मछली को खाना तो छोड़िए अगर आप इसे पकड़ने की भी कोशिश करेंगे तो आपकी जान पर बन आएगी।